करेंगे। उन्होंने कहा -'स्वच्छ और स्वस्थ भारत बनाने तथा खुले से शौच से मुक्ति के लिए सभी धर्मों को साथ आना चाहिए। स्वच्छता, पवित्रता और प्रकृति का सम्मान को प्रत्येक धर्म ने मान्यता दी है।

इसी तरह, स्वच्छता संकल्प में शामिल हुए **शिया प्रमुख मौलाना डॉ सईद कल्बे सादिक, संस्थापक तौहिदुल मुस्लिमीन ट्रस्ट** ने कहा कि आज से हम इस स्वप्न को पूरा करने में जुट जाएं। देश को स्वच्छ बनाने का संकल्प हमारे दिल में होना चाहिए और हमारे कार्य इस संकल्प को हकीकत में बदलने वाले होने चाहिए।

जैन समाज के प्रतिनिधि सम्मानीय आचार्य लोकेश मुनि ने कहा कि अहिंस और स्वच्छता साथ-साथ दिखाई देना चाहिए। हमारी अस्वच्छता प्रतिदिन अनेकों मासूमों की मृत्यु का कारण बनती है। यह पीड़ा अब खत्म होनी चाहिए। यह बदलाव लाना अब हम सभी की जिम्मेदारी है।

जीवा की महासचिव साध्वी भगवती सरस्वती ने बताया कि जीवा की स्थापना इस सिद्धांत पर की गई है कि एक धर्म गुरू होने के नाते हम सभी अपनी शांति की परिभाषा में यह भी शामिल करें कि सभी धर्मों के हमारे भाई-बहनों को साफ पेयजल, स्वच्छता और सफाई प्राप्त हो। प्रतिवर्ष जितने लोग सभी तरह की हिंसा से प्रभावित होते हैं, उन सबसे अधिक लोग अस्वच्छता के कारण कष्ट देखते हैं। हमें हमारे संकल्प को कार्य में परिणीत करना होगा। खुले में शौच को आज भले ही मान्यता मिली हुई है लेकिन जिस तरह तमाम क्रांतियों में हुआ है, जिस तरह समाज में स्वीकार्य दासता की परंपरा का अंत किया गया है, उसी तरह हम सभी के मिलेजुले प्रयासों से एक दिन खुले में शौच और अस्वच्छता भी सामाजिक अस्वीकार्यता और अपराध का दर्जा पा लेंगे। इस संकल्प के लिए सिंहस्थ महाकुंभ से बेहतर और कोई स्थान हो ही नहीं सकता था जहां लाखों श्रद्धालु आए हुए हैं।

यूनिसेफ भारत की वाश प्रभाग की प्रमुख सुश्री सू कोट्स ने कहा कि असुरक्षित पेयजल, अस्वच्छता और सफाई का अभाव डायरिया, सेप्सिस और निमोनिया जैसी बच्चों की बीमारियों का कारण हैं। ये तीन बीमारियां पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों सबसे बड़ी दुश्मन हैं। साक्ष्य बताते हैं कि डायरिया के 80 फीसदी मामले रोके जा सकते हैं यदि परिवार और मां शौचालय का उपयोग करे, साफ पेयजल पिए तथा खाने के पहले और शौच के बाद हाथ साबुन से धोएं। धर्म गुरू हमारे समाज और परिवारों में बहुत प्रभावी स्थान रखते हैं। उनका सहयोग समाज में सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और सफाई को बढ़ावा देने में प्रेरक हो सकता है, इसलिए यूनिसेफ ने इस संकल्प और उनकी इस महत्वपूर्ण भूमिका में सहयोग प्रदान किया है।

यूनिसेफ भारत की संचार प्रमुख सुश्री केरोलीन डेन डल्क ने कहा कि देश के प्रमुख धर्म गुरुओं का बच्चों का जीवन बचाने के महत्वपूर्ण कार्य में एक साथ संकल्प में शामिल होने से देश में आज से एक नए अध्याय की शुरुआत हुई है।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती ने कहा कि उन्होंने पांच महाद्वीपों में मंदिर बनवाने में सहयोग किया है लेकिन अब वे इस बात पर बल दे रहे हैं कि आइए पहले हम शौचालय बनाएं। शौचालय के बिना मानव मल के कारण फैली बीमारियों से सशक्त इंसान भी बीमार और कमजोर हो जाता है। अहिंसा के लिए हमारे देश के हर घर में शौचालय होना चाहिए और सभी को इसका उपयोग करना चाहिए। इस तरह हम स्वयं, हमारे प्रियजन और हमारे पड़ोसी अवांछित पीड़ा से बच सकेंगे।

संकल्प में शामिल सम्मानिय अतिथि :

- **जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी जी महाराज**
- **पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी**, सह-संस्थापक, ग्लोबल इंटफेथ वाश अलायंस और अध्यक्ष परमार्थ निकेतन ऋषिकेश
- **पूज्य स्वामी हरिचेतानंद जी**, हरिद्वार
- **डॉ सईद कल्बे सादिक,** संस्थापक तौहिदुल मुस्लिमीन ट्रस्ट, इस्लामिक गुरू (शिया प्रमुख)